CHAPTER 8, भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?

PAGE 116, अभ्यास

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'इस अभागे आलसी देश में जो कुछ हो जाए वहीं बहुत कुछ है क्यों कहा गया है?

उत्तर- पाठ में, भारतेंदु जी ने कहा है कि भारतीय लोग बड़ा आलसी प्रवृति वाले हो गए है हर भारतीय को आलस्य ने अवशोषित कर लिया गया है। यही कारण है कि भरत के लोग परिश्रम करने से भागते है जिसके कारण देश में निरंतर बेरोजगारी बढ़ रही है। यह देखते हुए कि उन्होंने कहा है कि दुर्भाग्यपूर्ण आलसी देश में, जो कुछ हो गए वही बहुत कुछ है। मनुष्य और देश के विकास के लिए हमें अपने भीतर व्याप्त आलस्य को दूर

करना होगा। हर भारतीयों को अपनी आलस्य रूपी बीमारी से छुटकारा पाना होगा।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. 'जहाँ रॉबर्ट साहब बहादुर जैसे कलेक्टर हों, वहाँ क्यों न ऐसा समाज हो' वाक्य में लेखक ने किस प्रकार के समाज की कल्पना की है?

उत्तर- इस वाक्य को लिखकर, लेखक ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां राजा सतर्क होगा। जहां राजा सतर्क होता। वहां के लोगों को जागरूक होना होगा। उन्हें आलस्य नहीं होता। समाज को अपने और राज्य के विकास के लिए काम करना होगा। समाज की जागरूकता के कारण, चारों विकसित और विकसित होंगे।

PAGE 117, अभ्यास

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. जिस प्रकार ट्रेन बिना इंजिन के नहीं चल सकती ठीक उसी प्रकार 'हिंदुस्तानी लोगों को कोई चलानेवाला हो' से लेखक ने अपने देश की खराबियों के मूल कारण खोजने के लिए क्यों कहा है?

उत्तर- लेखक का मानना है कि भारतीय आलस्य के कारण बेकार हो गए हैं। उनकी योग्यता और योग्यता आलस्य के कारण समाप्त हो गई है। उनमें अब नेतृत्व के गुण नहीं हैं। उन्हें किसी को ट्रेन के इंजन की तरह बनना होगा। होना चाहिए। विभिन्न जातियों, समुदायों आदि के लोग पूरे भारत में रहते हैं। उनके पास खुद चलने की क्षमता नहीं है। उन्हें सदियों से एक बाहरी व्यक्ति द्वारा पोषित किया गया है। यह सही नहीं है। तो लेखक कहता है कि हमें इसका कारण खोजना होगा। हम समस्या का समाधान तब तक नहीं कर पाएंगे जब तक हम कारण की जड़ नहीं खोज

लेते। हमें समस्या को खोजने और उसे हल करने की आवश्यकता है। हम भारतीय केवल दोष यह है कि हम समस्या को पहचानते हैं, लेकिन इसका मूल कारण नहीं खोजते हैं। जिस दिन हमने इसे पहचान लिया है, उस दिन हमारे दिन लौट आएंगे।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. देश की सब प्रकार की उन्नति हो, इसके लिए लेखक ने जो उपाय बताए उनमें से किन्हीं चार का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर- पाठ में, लेखक ने देश की प्रगति के लिए चार उपाय दिए हैं। वे इस प्रकार हैं: -

(क) लेखक का कहना है कि आलस्य हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। यही हमें निकम्मा बना दिया है। इसलिए हमें इस आलस्य को छोड़ना होगा और अपने समय का सही उपयोग करना होगा। इस

तरह हम समय का सही उपयोग कर सकते हैं और प्रगति के पथ पर चल सकते हैं।

(ख) हमें अपने हितों और हितों का त्याग करना होगा। लेखक के अनुसार, हमें अपने देश, जाति, समाज आदि के लिए अपने हितों और हितों का त्याग करना होगा।

(ग) हमें शिक्षा के महत्व को समझना होगा। हमें शिक्षा के महत्व को समझना होगा और इसे भारत में घर लाना होगा। इस तरह शिक्षित भारत की प्रगति निश्चित है।

(घ) हमें भारत के बाहर अन्य स्थानों को समझना होगा। इस तरह, हम कुओं की सनक नहीं बनेंगे और हम निश्चित रूप से प्रगति करेंगे।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. लेखक जनता के मत-मतांतर छोड़कर आपसी प्रेम बढ़ाने का आग्रह क्यों करता है?

उत्तर- लेखक जानता है कि भारतीय लोगों के पिछड़ेपन का सबसे बड़ा कारण प्रचलित जाति और अधार्मिक भेदभाव है। इसने भारत की नींव को खोखला कर दिया है। इसी कारण भारत की एकता और अखंडता खंडित हो रही है। धर्म और जाति भेद के कारण लोगो के मन में दूरियां बन गयी है। इसका फायदा अन्य लोग उठा रहे है। अंग्रेजों ने यहां 'फुट डालो शासन करो' की नीति पर शासन किया है। भारतीय जिस दिन मन की दूरियों को ख़त्म कर देंगे तब हमारा प्यार बढ़ने लगेगा, हमारा देश एकता के सूत्र में बंध जाएगा। ऐसा कोई शासन नहीं होगा जो हमें गुलाम बनाकर रख सके। इसलिए, वह आपसी प्रेम को त्यागने और आपसी प्रेम बढ़ाने का आग्रह करता है।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. आज देश की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्य को एक अनुच्छेद में स्पष्ट

कीजिए-

'जैसे हज़ार धारा होकर गंगा समुद्र में मिली हैं, वैसी ही तुम्हारी लक्ष्मी हज़ार तरह से इंग्लैड, फरांसीस, जर्मनी, अमेरिका को जाती हैं।'

उत्तर- लेखक का कहना है कि भारत का पैसा इंग्लैंड, फ्रांसिस, जर्मनी और अमेरिका में हजारों रूपों में जा रहा है। आज, स्थिति पूरी तरह से ऐसी नहीं है, फिर भी हमारा पैसा इन देशों में जा रहा है। आज भी, भारतीय विदेशी ब्रांड के कपड़े, जूते, घड़ियाँ, परफ्यूम आदि उपयोग करते हैं और इस तरह पैसा देश से बाहर जा रहा है।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:7

7. आपके विचार से देश की उन्नति किस प्रकार संभव है? कोई चार उदाहरण तर्क सहित दीजिए।

उत्तर- हमारे विचार में, देश की प्रगति के लिए ये चार उपाय प्रभावी हैं: -

(क) हमें आलसी नहीं होना चाहिए। हमें हमेशा काम करते रहना चाहिए। इस तरह हम समय के मूल्य को पहचान पाएंगे और इसका सही इस्तेमाल कर पाएंगे।

(ख) हमें अपने देशों के विकास और प्रगति के लिए भी काम करना चाहिए। इसी प्रकार, यह सर्वविदित है कि जैसे-जैसे हम विकास और प्रगति की ओर बढ़ते हैं, देश की प्रगति और विकास भी प्रगति करता है। हम देश के साथ जुड़े हुए हैं। इसलिए अगर हम तरक्की करेंगे तो देश भी करेगा।

(ग) देश में शिक्षा का प्रसार करना आवश्यक है। जहां शिक्षा है, वहां विकास का मार्ग खुलता है। इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया जाना चाहिए कि देश में कोई अनपढ़ लोग नहीं हैं।

(घ) हमें जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा। हमारे देश के साधन जनसंख्या के कारण समाप्त हो जाएंगे और हमें अन्य देशों पर निर्भर होना पड़ेगा। इसलिए हमें जनसंख्या को बढ़ने से रोकना होगा।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:8

8. भाषण की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए कि पाठ 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' एक भाषण है।

उत्तर- भाषण की चार विशेषताएँ इस प्रकार हैं: -

(क) भाषण संबोधन शैली पर आधारित होते हैं। यह शुरुआत से ही किया जाता है।

(ख) भाषण के समय, ऐसे उदाहरण जनता के सामने रखे जाते हैं, जो उन्हें विषय से जोड़े रखते हैं और मामले को प्रभावी बनाते हैं।

(ग) दर्शकों को किसी विषय से अवगत कराने का यह सबसे अच्छा तरीका है। इसके जरिए दर्शकों का विश्वास हासिल किया जाता है। यह दर्शकों के साथ संबंध स्थापित करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

(घ) ऐसे विषयों का उल्लेख करना आवश्यक है जो श्रोता के लिए ज्ञानवर्धक हैं। भारतेंदु जी का यह भाषण सर्वविदित है। इसके माध्यम से उन्होंने बलिया के लोगों को जोड़ा। इसमें उन्होंने भारत के लोगों की कमियों के बारे में बताया, ब्रिटिश शासन पर व्यंग्य किया और उनके काम की प्रशंसा की। इसमें उन्होंने कई विषयों पर बात की। कि मैंने यह भाषण चेतावनी और लोगों को सावधान करने के उद्देश्य से दिया था। इस भाषण में हर विषय जो किसी न किसी तरह से बनाया गया था, भारत को कमजोर बना रहा था।

11:9:1: प्रश्न-अभ्यास:9

9. 'अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति करो' से लेखक का क्या तात्पर्य है? वर्तमान संदर्भों में इसकी प्रासंगिता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- हर देश की अपनी राष्ट्रीय भाषा होती है। सभी आधिकारिक और अर्ध-आधिकारिक कार्य एक ही भाषा में किए जाते हैं। यह शिक्षा का एक माध्यम भी है। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से विकास के पथ पर अग्रसर होता है। दुनिया के सभी देशों के पास देश की भाषा के माध्यम से किए गए अपने स्वयं के कई आविष्कार हैं। इसलिए उन्नति का तात्पर्य भाषा के माध्यम से विकास से है। यह सच है कि अपनी भाषा में काम करने वाला देश आगे नहीं बढ़ता है। जापान और चीन जैसे देश अपनी भाषा का उपयोग करते हैं। यही कारण है कि यह देश आज

सबसे सफल है। लेकिन विडंबना देखिए कि हिंदी की आजादी के 63 साल बाद भी उसके सम्मान का स्थान उसे हासिल नहीं हो सका।

स्वतंत्रता के समय, हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयास का कड़ा विरोध किया गया था और यह तर्क दिया गया था कि इससे प्रांतीय भाषाओं को पीछे छोड़ दिया जाएगा। यदि कई प्रमुख नेता और अभिनेता अपनी भाषा में बयान देने से कतराते हैं, तो इसे भारत में कैसे स्थापित किया जाएगा। भारतीयों द्वारा हिंदी को अपमानित किया जा रहा है। अखिल भारतीय भाषा संरक्षण संगठन हिंदी और अन्य भाषाओं का परीक्षण कुछ समय के लिए किया गया है। इसे माध्यम बनाने के लिए संघर्ष किया। यह अभी तक सफल नहीं हुआ है। एक दिन जरूर होगा जब जनता सरकार को मजबूर करेगी और हिंदी को अपनी जगह जरूर मिलेगी।

10. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए-
(क) सास के अनुमोदन से ..... फिर परदेस चला जाएगा।
(ख) दरिद्र कुटुंबी इस तरह ..... वही दशा हिंदुस्तान की है।
(ग) वास्तविक धर्म तो ..... शोधे और बदले जा सकते हैं।

उत्तर

(क) लेखक भारवासियों के आलस्य प्रवृत्ति पर उदाहरण के माध्यम से कटाक्ष करते हैं। वह बताते हैं कि एक बहू अपनी सास से पति से मिलने की आज्ञा लेकर पति के पास गई। वहाँ उसका मिलन नहीं हो पाया। कारण वह लज्जा के कारण कुछ बोल ही नहीं पायी। सारी परिस्थितियाँ उसके अनुकूल थीं। मगर लज्जा उसके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बन गई। उसे इस कारण पति का मुख देखना भी नसीब नहीं हुआ। अब इसे उसका दुर्भाग्य ही कहें कि अगले दिन उसका पति वापिस जाने वाला था। अतः उसने आया अवसर गँवा दिया। इसके माध्यम से लेखक बताना चाहते हैं कि भारवासियों को सभी प्रकार के अवसर मिले हुए हैं। भारतवासियों में आलस्य इस प्रकार छाया हुआ है कि वह इस अवसर का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसके बाद यह अवसर चला गया, तो हमारे पास दुख और पछतावे के अतिरिक्त कुछ नहीं बचेगा।

(ख) इसका आशय है कि एक गरीब परिवार समाज में अपनी इज्जत बचाने में असमर्थ हो जाता है। लेखक एक उदाहरण के माध्यम से अपनी बात स्पष्ट करते हैं। वे कहते हैं कि गरीब तथा कुलीन वधू अपने फटे हुए वस्त्रों में अपने अंगों को छिपाकर अपनी इज्जत बचाने का हर संभव प्रयास करती है। भाव यह है कि उसके पास साधन बहुत ही सीमित हैं और वह उसमें ही कोशिश करती है। ऐसे ही भारतावासियों के हाल है। चारों ओर गरीबी विद्यमान है। सभी गरीबी से त्रस्त हैं। इसके कारण लोग अपनी इज्जत बचा पाने में असमर्थ हो रहे हैं। यह गद्यांश भारत की गरीबी का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

(ग) यह गद्यांश उस स्वरूप को दर्शाता है, जो भारत में विद्यमान धर्मों का है। धर्म मनुष्य को भगवान के चरण कमलों की भक्ति करने के लिए कहता है। हमें इसे समझना होगा। जो अन्य बातें धर्म के साथ जोड़ी गई हैं, वे समाज-धर्म कहलाती हैं। समय और देश के अनुसार इनमें परिवर्तन किया जाना चाहिए। धर्म का मूल स्वरूप हमेशा एक सा रहता है। बस हमें उसके व्यावहारिक पक्ष को बदलने का प्रयास करना चाहिए।